(राजस्थान की मृदाएँ)

1. रेतीली या बलुई मृदा :-
* ये मृदा राजस्थान के सर्वाधिक क्षेत्रों में पाई जाती है।
* ये मृदा कम उपजाऊ होती है। इसमें 90-95% बालू तथा 5-7% मृत्तिका (क्ले) पाई जाती है।
* ये जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, चुरू व झुंझुनूं में पायी जाती है।
* प्रमुख फसलें : बाजरा

2. भूरी रेतीली मृदा :-
* रंग भूरा, रेतीली की अपेक्षा अधिक उपजाऊ, फास्फोरस तत्व की अधिकता।
* अरावली के पश्चिमी भागों में यह मृदा लगभग 36500 km^2 में विस्तृत है।
* ये बाड़मेर, जालोर, जोधपुर, पाली, नागौर, सीकर, झुंझुनूं जिलो में फैली है।
* फसलें : ईसबगोल, सोनामुखी, तिल, बाजरा, अनार आदि।

3. लाल पीली मृदा :-
* ये मृदा कम उपजाऊ होती है।
* अरावली पर्वतमाला के ढलानों में पायी जाती है।
* इसमें कैल्शियम कार्बोनेट व चूने की मात्रा अधिक पाई जाती है।
* मुख्यत: उदयपुर, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, सिरोही, अजमेर, चितौड़ जिलों में।
* इसमें कपास, मूंगफली तथा मक्का की फसलें बोयी जा सकती है।

4. लाल लोमी मृदा :-
* इसमें लाल रंग का कारण उपस्थित लोह कण है।
* इसमें चूना, पोटाश एवं फॉस्फोरस की कमी होती है।
* ये मृदा: डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, उदयपुर व चितौड़गढ़ के कुछ भागों में पायी जाती है।
* फसलें : चावल, कपास, चना, गेहूँ, गन्ना आदि।

Neel Kamal
Date
Page

5. दोमट या कछारी मृदा :-

* ये मृदा फसल उत्पादन व कृषि क्रियाओं के लिए सर्वोत्तम।
* इसकी रचना नदी प्रवाह क्षेत्रों में होती है।
* राजस्थान में ये अलवर, भरतपुर, धौलपुर, टोंक, कोटा, सवाईमाधोपुर
* इसमें सभी फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है।

6. काली मृदा या रेगुर या काली कपास वाली मृदा :-

* ये उदयपुर व कोटा खण्ड में बहुतायत से पायी जाती है।
* कपास, सोयाबीन, लहसून, धनिया आदि फसलें बहुतायत मात्रा में होती।
* इसे स्वत: जुताई वाली मृदा भी कहते है।
* काली मृदा में मोंटमोरिलोनाइट खनिज की अधिकता उत्पन्न होने वाली दरारों के लिए जिम्मेदार है।

Download More Notes PDF's @RajasthanClasses

7. लाल व काली मिश्रित मृदा :-

* इसमें: नाइट्रोजन, फास्फेट, कैल्सियम और कार्बनिक पदार्थों की कमी होती है।
* ये भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर के पूर्वी भागों में पायी जाती है।
* अफीम, सीताफल, मक्का व कपास की अच्छी उत्पादक होती है।

8. भूरी रेतीली कछारी मृदा :-

* ये मिट्टी नदियों द्वारा लायी गई है।
* ये कपास, गेहूँ व सरसों के उत्पादन के लिए अच्छी है।
* ये मिट्टी अलवर व भरतपुर के उत्तरी भागों में और गंगानगर के मध्य भाग में मिलती है।

RAJASTHAN CLASSES EDU
COPYRIGHT
Helpline : 8107670333

Download More Notes PDF's @RajasthanClasses

Date
Page

मृदा गण :-

→ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने USDA के मृदा-वर्गीकरण के आधार पर भारतीय मृदा को निम्न मृदा गणों में बाँटा है।

* इन्सेप्टीसोल्स :-

→ भारत के सर्वाधिक क्षेत्र (39.74%) में इसी मृदा गण का विस्तार है।

* एन्टीसोल्स :-

→ इसके टोरी सामेन्ट्स व डस्ट-फ्लूवेन्ट्स उपवर्ग राजस्थान में है, इस मृदा गण का राजस्थान में सर्वाधिक विस्तार है।

→ ये शुष्क व अर्द्ध शुष्क जलवायु क्षेत्रों में फैली है।

→ रंग: हल्का पीला एवं भूरा व नवविकसित अकार्बनिक मृदाएँ है।

* एल्फीसोल्स :-

→ मध्यम क्षरण वाला ये मृदा गण पूर्वी राजस्थान में देखने को मिलता है।

* वर्टीसोल्स :-

→ ये काली-कपासी मृदा का गण है। जिसका प्रधान क्षेत्र कोटा, झालावाड़, बूंदी व बारां है।

* एरिडीसोल्स :-

→ ये शुष्क जलवायु का मृदा गण है।

→ पश्चिमी राजस्थान की ये प्रधान मृदा गण है।

THAN CLASSES EDU
COPYRIGHT
Helpline : 8107670333

* मॉलीसोल्स :-

→ ये गहरे रंग वाली व जैविक पदार्थ अधिकता वाली मृदाएँ होती है।

* अल्टीसोल्स :- इस मृदा गण में क्षरण अधिक होता है।

→ ये अधिकतर आर्द्र उष्ण क्षेत्रों में प्राकृतिक पर्णपाती वनों से निर्मित इस मृदा में सस्तर नहीं पाए जाते और अम्लीय प्रकृति की होती है।

Download More Notes PDF's @RajasthanClasses

मृदा का कृषि विभागीय वर्गीकरण :-

* राज्य के कृषि विभाग ने राजस्थान की मृदाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है।

मृदा का प्रकार	जिले
साई रोजेक्स	गंगानगर
रेवेरिना	गंगानगर
जिप्सीफिरस	बीकानेर
केल्सी ब्राउन मरुस्थलीय मृदा	जैसलमेर व बीकानेर
मरुस्थलीय एवं बालूका स्तूप	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर
मरुस्थलीय मृदा	गंगानगर, चुरु, झुंझुनूं, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, सीकर।
नॉन केल्सिल ब्राउन मृदा	जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, नागौर, अजमेर एवं अलवर
ग्रे ब्राउन जलोढ़ मृदा	जालौर, पाली, नागौर, अजमेर, सीकर
पीली-भूरी मृदा	जयपुर, टोंक, स. माधोपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर।
नवीन भूरी मृदा	भीलवाड़ा एवं अजमेर।
पर्वतीय मृदा	उदयपुर एवं कोटा।
काली गहरी मध्यम मृदा	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़।
लाल लोमी मृदा	डूंगरपुर, एवं बांसवाड़ा।

RAJASTHAN CLASSES EDU
COPYRIGHT
Helpline : 8107670338

* मृदा में उपस्थित पोषक तत्व ज्ञात करने की विधियाँ :-

- मृदा में उपस्थित कुल नाइट्रोजन - जेल्डाल विधि
- पौधो के लिए उपलब्ध नाइट्रोजन - इल्केलाइन परमैंगनेट विधि
- मृदा की अम्लीय अवस्था में फॉस्फोरस की मात्रा - Bray No. 1 विधि
- मृदा की उदासीन न क्षारीय अवस्था में फॉस्फोरस की मात्रा - ओलसन विधि
- मृदा में पोटास व सोडियम की मात्रा - फ्लेम फोटोमीटर।
- मृदा में सल्फर की मात्रा - टरबिमेटरिक विधि।
- मृदा में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा - ब्लेक विधि व मॉर्गन विधि।

—**—

Download More Notes PDF's @RajasthanClasses

Telegram
चैनल
ज्वॉइन करें

YouTube पर
ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए
गूगल सर्च करें या क्लिक करें
Google
rajasthanclasses.in

राजस्थान सामान्य ज्ञान
कला संस्कृति, भूगोल, इतिहास संपूर्ण राजस्थान जीके
सभी टॉपिक वाइज नोट्स व प्रश्नोत्तरी PDF
सभी भर्ती परीक्षाओं हेतु उपयोगी PDF
राजस्थान GK All PDF's